हिन्दी पाक्षिक

# महानगर स्तंभ

RNI NO. RAJHIN/2017/70561

पृष्ठ संख्या.... 2

❐ वर्ष-8 ❐ अंक-19 जयपुर, मंगलवार 1 अक्टूबर, 2024 ❐ एक प्रति 5 रुपये ❐ कुल पृष्ठ-4

# आईटी पुरस्कार 2024 - प्रौद्योगिकी में नवाचार और उत्कृष्टता को मिला सम्मान

**नई दिल्ली।** आईटी वॉयस मीडिया द्वारा 26 सितम्बर को नई दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर में आईटी पुरस्कार 2024 का भव्य किया गया। इस कार्यक्रम में प्रौद्योगिकी क्षेत्र से जुड़े प्रतिष्ठित व्यक्तियों, नवप्रवर्तकों और उत्कृष्ट लोगों को आईटी क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गए उल्लेखनीय योगदान को सम्मानित किया गया। समारोह नवाचार का सम्मान, प्रौद्योगिकी का जश्न थीम पर आधारित रहा। यहां तकनीकी उद्योग के सबसे नवीन विचारों और तकनीकी उन्नति की सीमाओं को आगे बढ़ाने वाले व्यवसायों का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में कई प्रतिष्ठित अतिथियों ने भाग लिया। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के डिजिटल इंडिया भाषा प्रभाग के सीईओ अमिताभ नाग मुख्य अतिथि रहे। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि ने भारत के डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में भाषाई समावेशिता के महत्व पर आपने महत्वपूर्ण विचार रखे। समीरन गुप्ता, ICANN में स्टेक होल्डर एंगेजमेंट के उपाध्यक्ष और प्रबंध निदेशक - APAC ने अतिथि के रूप में अपने विचार रखते हुए एक सुरक्षित, वैश्विक रूप से सुलभ इंटरनेट के महत्व पर चर्चा की। उनके साथ आइरिस ग्लोबल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक और सीएमडी संजीव कृष्ण, नेशनल इंटरनेट एक्सचेंज ऑफ इंडिया के संस्थापक और टेलेक्सेस कंसल्टिंग सर्विसेज के निदेशक अमिताभ सिंघल, आइरिस ग्लोबल की संस्थापक और निदेशक कामिनी तलवार और यूनिलाइन एनर्जी सिस्टम्स के संस्थापक और एमडी

आर के बंसल भी मौजूद रहें। सभी ने भारत में प्रौद्योगिकी और नवाचार के भविष्य पर अपने विचार साझा किए।

आईटी वॉयस मीडिया के सीईओ और मुख्य संपादक डॉ. तरुण टौंक ने इस कार्यक्रम का संचालन किया। उनके अनुसार यह समारोह तकनीकी उद्योग को आगे बढ़ाने वाले नवप्रवर्तकों के साथ जश्न मनाना और उन्हें सम्मानित करना है। साथ ही आईटी वॉयस मीडिया को प्रौद्योगिकी जागरूकता और विचार नेतृत्व के लिए एक वैश्विक मंच के रूप में आकार दे रहा है। मुख्य समारोह में शाम को भव्य पुरस्कार समारोह आयोजित हुआ, जहां विभिन्न उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली कंपनियों और व्यक्तियों को सम्मानित किया गया ASUS और Bright Computer ने गोल्ड पार्टनर के रूप में सहयोग किया, जबकि Philips India सिल्वर पार्टनर रहा। Digisol ने नेटवर्किंग पार्टनर के रूप में जिम्मेदारी संभाली, जिससे कार्यक्रम की सहज कनेक्टिविटी और संचार सुनिश्चित हुआ। इसके अलावा, सहायक भागीदारों में आइरिस ग्लोबल सर्विसेज, डेल टेक्नोलॉजीज, कॉसिस्टेंट इंफोसिस्टम्स, साई सिक्योरिटी सिस्टम्स, थर्मल टेक, गैमडियास, यूनिलाइन एनर्जी सिस्टम्स, पालो, लामा क्रिएटिव्स और फ्रेंड्स इंटरनेशनल जैसे अग्रणी संगठन शामिल थे, जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आईटी पुरस्कारों को RITO, PCAIT, ADCTA, JCTA, ISODA, COMPASS और FITAG सहित विभिन्न संघों से भी समर्थन मिला, जो पूरे भारत में आईटी चैनल भागीदारों के हितों का प्रतिनिधित्व करने में सहायक रहे हैं। सुपरट्रॉन इलेक्ट्रॉनिक्स प्राइवेट लिमिटेड, इनग्राम माइक्रोइंडिया प्राइवेट लिमिटेड, फॉर्च्यून मार्केटिंग प्राइवेट लिमिटेड, टीपी-लिंक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, राशि पेरिफेरल्स और सेवक्स टेक्नोलॉजीज जैसी कंपनियों को तकनीकी उद्योग में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सराहा गया। कार्यक्रम का समापन कई उद्योग दिग्गजों के पुरस्कार प्रदान करने के साथ हुआ, जिनमें ब्रदर इंटरनेशनल (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, हनी वेल इंटरनेशनल (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, टीपी-लिंक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, लैपकेयर, बेनक्यू इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और माइक्रोन द्वारा करूशियल शामिल हैं, जिन्हें आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स में उनके अभूतपूर्व नवाचारों एवं उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया।

यह कार्यक्रम केवल विजेताओं का जश्न मनाने का अवसर नहीं था। यह एक ऐसी शाम थी जिसने भारत और विश्व स्तर पर आईटी परिदृश्य को आकार देने में शामिल सभी लोगों के सामूहिक योगदान को स्वीकार किया। आईटी वॉयस मीडिया की वैश्विक उपस्थिति के साथ, यह कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। आईटी वॉयस ने दुबई, यूरोप और एशिया में GITEX के लिए आधिकारिक मीडिया पार्टनर के रूप में अपनी साझेदारी की गर्व से घोषणा की, जो किसी अन्य भारतीय टेक मीडिया हाउस ने हासिल नहीं की है। आईटी वॉयस हमेशा से टेक पत्रकारिता में सबसे आगे रहा है। इसने न केवल बार्सिलोना और टोक्यो में ICANN कार्यक्रमों को कवर किया है, बल्कि अपनी मासिक पत्रिका, समाचार पत्र और भारत के पहले टेक न्यूज ओटीटी प्लेटफॉर्म के साथ भारतीय टेक मीडिया परिदृश्य में एक सितारे के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को भी मजबूत किया है। यह कार्यक्रम प्रौद्योगिकी जागरूकता को बढ़ावा देने और उद्योग को प्रौद्योगिकी के भविष्य का जश्न मनाने और प्रेरित करने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए आईटी वॉयस के चल रहे मिशन का एक प्रमाण है।

जैसे-जैसे पुरस्कार समारोह आगे बढ़ता गया, माहौल उत्साह और निरंतर विकसित हो रही तकनीक की दुनिया में आगे क्या होने वाला है, इसकी प्रत्याशा से भर गया। आईटी पुरस्कार 2024 हमेशा ही नवाचार को मान्यता देने, उपलब्धियों का जश्न मनाने और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भविष्य की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने के रूप में एक मील के पत्थर के रूप में याद रखा जाएगा।

# लाल बहादुर शास्त्री

लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1901 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी में छोटे से रेलवे टाउन, मुगलसराय में हुआ था। उनके पिता एक स्कूल शिक्षक थे। लाल बहादुर शास्त्री जब डेढ़ वर्ष के थे तभी उनके पिता का देहांत हो गया था। उनकी माँ अपने तीनों बच्चों के साथ अपने पिता के घर जाकर बस गईं। उस छोटे-से शहर में लाल बहादुर की स्कूली शिक्षा कुछ खास नहीं रही। उन्हें वाराणसी में चाचा के साथ रहने के लिए भेजा गया। ताकि वे उच्च विद्यालय की शिक्षा प्राप्त कर सकें। घर पर सब उन्हें नन्हे के नाम से पुकारते थे। वे कई मील की दूरी नंगे पांव से ही तय कर विद्यालय जाते थे, यहाँ तक की भीषण गर्मी में जब सड़कें अत्यधिक गर्म हुआ करती थीं तब भी उन्हें ऐसे ही जाना पड़ता था। बड़े होने के साथ-ही लाल बहादुर शास्त्री विदेशी दासता से आजादी के लिए देश के संघर्ष में अधिक रुचि रखने लगे। वे भारत में ब्रिटिश शासन का समर्थन कर रहे भारतीय राजाओं की महात्मा गांधी द्वारा की गई निंदा से अत्यंत प्रभावित हुए। लाल बहादुर शास्त्री जब केवल ग्यारह वर्ष के थे तब से ही उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कुछ करने का मन बना लिया था।

गांधी जी ने असहयोग आंदोलन में शामिल होने के लिए अपने देशवासियों से आह्वान किया था, इस समय लाल बहादुर शास्त्री केवल सोलह वर्ष के थे। उन्होंने महात्मा गांधी के इस आह्वान पर अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय कर लिया था। उनके इस निर्णय से परिवार वाले निराश हुए। उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वे इसमें असफल रहे। लाल बहादुर ने अपना मन बना लिया था। उनके सभी करीबी लोगों को यह पता था कि एक बार

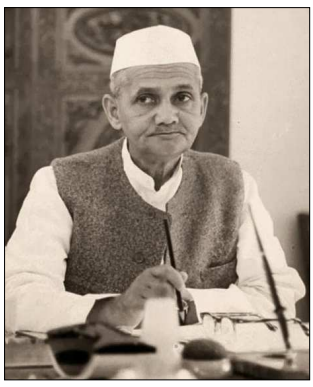

मन बना लेने के बाद वे अपना निर्णय कभी नहीं बदलेंगें क्योंकि बाहर से विनम्र दिखने के साथ साथ चट्टान की तरह दृढ़ भी थे। लाल बहादुर शास्त्री ब्रिटिश शासन काल में स्थापित किये गए कई राष्ट्रीय संस्थानों में से एक वाराणसी के काशी विद्या पीठ में शामिल हुए। यहाँ वे महान विद्वानों एवं देश के राष्ट्रवादियों के प्रभाव में आए। विद्या पीठ द्वारा उन्हें प्रदत्त स्नातक की डिग्री का नाम 'शास्त्री' था उसके बाद से उनके नाम में शास्त्री जुड़ गया। 1927 में उनकी शादी हुई। उनकी पत्नी ललिता देवी मिर्जापुर से थीं।

1930 में महात्मा गांधी ने नमक कानून को तोड़ते हुए दांडी यात्रा की। इस प्रतीकात्मक सन्देश ने पूरे देश में एक तरह की क्रांति ला दी। लाल बहादुर शास्त्री विह्वल ऊर्जा के साथ स्वतंत्रता के इस संघर्ष में शामिल हो गए। उन्होंने कई विद्रोही अभियानों का नेतृत्व किया एवं कुल सात वर्षों तक ब्रिटिश जेलों में रहे। आजादी के इस संघर्ष ने उन्हें पूर्णतः परिपक्व बना दिया। आजादी के बाद जब कांग्रेस सत्ता में आई, तब लाल बहादुर शास्त्री को देश के शासन में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए कहा गया। उन्हें अपने गृह राज्य उत्तर प्रदेश का संसदीय सचिव नियुक्त किया गया और जल्द ही वे गृह मंत्री के पद पर भी आसीन हुए। कड़ी मेहनत करने की उनकी क्षमता एवं उनकी दक्षता उत्तर प्रदेश में एक लोकोक्ति बन गई। वे 1951 में नई दिल्ली आ गए एवं केंद्रीय मंत्रिमंडल के कई विभागों का प्रभार संभाला। रेल मंत्रीय परिवहन एवं संचार मंत्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रीय गृह मंत्री एवं नेहरू जी की बीमारी के दौरान बिना विभाग के मंत्री रहे। उनकी प्रतिष्ठा लगातार बढ़ रही थी। एक रेल दुर्घटना, जिसमें कई लोग मारे गए थे, के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था। देश एवं संसद ने उनके इस अभूतपूर्व पहल को काफी सराहा। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने इस घटना पर संसद में बोलते हुए लाल बहादुर शास्त्री की ईमानदारी एवं उच्च आदर्शों की काफी तारीफ की। उन्होंने कहा कि उन्होंने लाल बहादुर शास्त्री का इस्तीफा इसलिए नहीं स्वीकार किया है कि जो कुछ हुआ वे इसके लिए जिम्मेदार हैं बल्कि इसलिए स्वीकार किया है क्योंकि इससे संवैधानिक मर्यादा में एक मिसाल कायम होगी। रेल दुर्घटना पर लंबी बहस का जवाब देते हुए लाल बहादुर शास्त्री ने कहाय ÷शायद मेरे लंबाई में छोटे होने एवं नम्र होने के कारण लोगों को लगता है कि मैं बहुत दृढ नहीं हो पा रहा हूँ। यद्यपि शारीरिक रूप से में मैं मजबूत नहीं है लेकिन मुझे लगता है कि मैं आंतरिक रूप से इतना कमजोर भी नहीं हूँ।÷

अपने मंत्रालय के कामकाज के दौरान भी वे कांग्रेस पार्टी से संबंधित मामलों को देखते रहे एवं उसमें अपना भरपूर योगदान दिया। 1952, 1957 एवं 1962 के आम चुनावों में पार्टी की निर्णायक एवं जबर्दस्त सफलता में उनकी सांगठनिक प्रतिभा एवं चीजों को नजदीक से परखने की उनकी अद्भुत क्षमता का बड़ा योगदान था। इनकी प्रतिभा और निष्ठा को देखते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के पश्चात कांग्रेस पार्टी ने 1964 में लाल बहादुर शास्त्री को प्रधानमंत्री पद का उत्तरदायित्व सौंपा। लाल बहादुर शास्त्री ने 9 जून 1964 को भारत के प्रधान मन्त्री का पद भार ग्रहण किया। तीस से अधिक वर्षों तक अपनी समर्पित सेवा के दौरान लाल बहादुर शास्त्री अपनी उदात्त निष्ठा एवं क्षमता के लिए लोगों के बीच प्रसिद्ध हो गए।

विनम्र, दृढ़, सहिष्णु एवं जबर्दस्त आंतरिक शक्ति वाले शास्त्री जी लोगों के बीच ऐसे व्यक्ति बनकर उभरे जिन्होंने लोगों की भावनाओं को समझा। वे दूरदर्शी थे जो देश को प्रगति के मार्ग पर लेकर आये। प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने 26 जनवरी, 1965 को देश के जवानों और किसानों को अपने कर्म और निष्ठा के प्रति सुदृढ़ रहने और देश को खाद्य के क्षेत्र में आत्म निर्भर बनाने के उद्देश्य से 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया। यह नारा आज भी लोकप्रिय है। उजबेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के साथ युद्ध समाप्त करने के समझौते पर हस्ताक्षर करने के पश्चात 11 जनवरी, 1966 की रात को इनकी मृत्यु हो गई। लाल बहादुर शास्त्री को मरणोपरान्त भारत रत्न सम्मान दिया गया। लाल बहादुर शास्त्री की सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी बेमिसाल रही। वे देश के अग्रणी निर्माताओं मे से एक थे।

## संपादकीय

# अभियान स्वच्छ भारत का....

स्वच्छ भारत अभियान के एक दशक पूरे हो गए हैं। इस दौरान स्वच्छता के मोर्चे पर देश ने बहुत कुछ हासिल किया है। ऐसा नहीं कि भारत में स्वच्छता की अवधारणा नहीं रही है। भारत के प्राचीन ग्रंथ,सामाजिक व्यवस्था और मंदिर संस्कृति की परंपराएं स्वच्छता की भारतीय धारा की गवाह हैं।साल 1901 के कोलकाता के कांग्रेस अधिवेशन में दक्षिण अफ्रीका से हिस्सा लेने पहुंचे गांधी को अजीब अनुभव हुआ। प्रतिनिधियों को ठहरने वाले शिविर में सफाई की हालत बेहद खराब थी। कई प्रतिनिधि ऐसे थे, जिन्होंने उन कमरों के बाहर बने बरामदे का ही शौचालय के रूप में इस्तेमाल कर दिया। दुर्गंध और गंदगी के बावजूद दूसरे प्रतिनिधियों को इस पर कोई ऐतराज नहीं था। लेकिन गांधी जी से बर्दाश्त नहीं हुआ। तब तक वे पश्चिमी वेशभूषा में रहते थे। अधिवेशन में सहयोग के लिए तैनात स्वयंसेवकों से गांधी जी ने स्वच्छता की बाबत बात की, तो उन्होंने टका-सा जवाब दे दिया था, ÷यह हमारा काम नहीं है, यह सफाईकर्मी का काम है।÷ गांधी जी से बर्दाश्त नहीं हुआ। उन्होंने अपने कपड़े उतारे, झाड़ू मंगवाई और वहां मौजूद गंदगी साफ को साफ करने में जुट गए। सफाई के बाद वे फिर से कोट-पैंट में आ गए। भारतीय राजनीति में तब तक गांधी का सितारा बहुत नहीं चमक पाया था। लेकिन उन्होंने राजनीति की दुनिया में सफाई के विचार का बीज रोप दिया। कोलकाता अधिवेशन में दिखी गंदगी का ही असर कह सकते हैं कि बाद के दिनों में उन्होंने विचार दिया, स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है। गांधी के रचनात्मक शिष्यों यथा बिनोबा, ठक्कर बापा आदि ने स्वच्छता और सफाई के इस गुर को बहुत आगे बढ़ाया। लेकिन जिसे मुख्यधारा की राजनीति कहते हैं, उसने स्वच्छता के गांधीवादी दर्शन को उसी रूप में बाद में शायद ही स्वीकार किया।

# आइफा 25 सेलिब्रेशन को होस्ट करेगी पिंक सिटी





**जयपुर।** उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी एवं शासन सचिव पर्यटन विभाग रवि जैन की उपस्थिति में 22 सितम्बर को अल्बर्ट हॉल (म्यूजियम) में आईआईएफए के वाइस प्रेसिडेन्ट सुरेश अय्यर तथा राजस्थान सरकार के पर्यटन आयुक्त विजय पाल सिंह द्वारा आइफा25 सेलिब्रेशन / जयपुर होस्ट सिटी एग्रीमेंट साइनिंग सेरेमनी में एमओयू पर हस्ताक्षर किये गये। इस एमओयू के तहत 7 से 9 मार्च 2025 में जयपुर में आइफा25 सेलिब्रेशन्स कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पर्यटन को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए राज्य में पर्यटन के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसी क्रम में राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा मार्गदर्शन में जयपुर में आगामी 7 से 9 मार्च को आइफा25 सेलिब्रेशन कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

दिया कुमारी ने कहा कि आईफा अवार्ड्स् से निश्चित ही राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। आयोजन के दौरान बॉलीवुड के जाने-माने सितारे और फिल्मी जगत की हस्तियां जयपुर में हमारे मेहमान होंगे। हम सिनेमा जगत से जुड़े हुए इन सेलिब्रिटीज का राजस्थान और जयपुर में स्वागत करेंगे। इस आयोजन के माध्यम से राजस्थान की इस अनुठी संस्कृति और पर्यटन को वैश्विक मंच पर और अधिक मजबूती मिलेगी। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि आईफा अवार्ड की सिल्वर जुबली के अवसर पर ऐतिहासिक रूप से जयपुर में भारतीय सिनेमा के 25 शानदार वर्षों का जश्न मनाने का समारोह आयोजित किया जाएगा। तीन दिन तक विभिन्न् सेगमेन्टस में आईफा अवार्ड्स् और गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। इस आयोजन से राजस्थान के पर्यटन को शानदार बढ़ावा मिलेगा, यहां पर्यटन के क्षेत्र में निवेश बढ़ेगा, रोजगार के अवसर पैदा होंगे। उन्होंने कहा कि इससे पर्यटन से जुड़े सभी क्षेत्रों को फायदा होगा।

आईफा के वाईस प्रेसिडेन्ट सुरेश अय्यर ने इस अवसर पर बताया कि मार्च 2025 में जयपुर राजस्थान में यह यूनिक सिग्नेचर इंवेन्ट आयोजित किया जाएगा। हम भारतीय सिनेमा का उत्सव मनायेंगे। उन्होंने बताया कि आइफा की स्थापना सन 2000 में हुई थी। उन्होंने कहा कि प्र्थ का आयोजन प्रतिवर्ष 14 विभिन्न देशों और 18 अलग-अलग शहरों में विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में किया जाता रहा है। भारत में आखिरी बार आइफा का आयोजन 2020 में मुंबई में हुआ था, और अब यह मौका 2025 में जयपुर को मिला है।

# लोक अदालत में आपसी समझाइश से हुआ 5,51,292 लंबित प्रकरणों का निस्तारण

**जयपुर।** राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा 28 सितम्बर को आयोजित वर्ष 2024 की तृतीय राष्ट्रीय लोक अदालत में 5,51,292 लंबित प्रकरणों का राजीनामे के जरिए निस्तारण कर लोक अदालत की भावना को साकार किया गया। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में इन लंबित प्रकरणों सहित प्री-लिटिगेशन स्तर तक के समस्त 29,78,564 प्रकरणों का आपसी समझाइश से निस्तारण किया गया। इनमें कुल 11 अरब 62 करोड़ 38 लाख रूपए से अधिक की राशि के अवॉर्ड पारित किए गए। इस राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर एवं जयपुर पीठ सहित प्रदेश के सभी जिला एवं मजिस्ट्रेट विचारण न्यायालयों, अधिकरणों, आयोगों, उपभोक्ता मंच तथा राजस्व न्यायालयों आदि में किया गया। उच्च न्यायालय की जोधपुर मुख्य पीठ में 262 तथा जयपुर पीठ में 570 प्रकरणों का राजीनामे से निस्तारण किया गया। इससे पहले राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति अनूप कुमार ढंड़ ने राजस्थान उच्च न्यायालय की जयपुर पीठ के परिसर में इस राष्ट्रीय लोक अदालत का शुभारंभ किया। शुभारंभ समारोह में न्यायाधिपति ढंड ने कहा कि राष्ट्रीय लोक अदालत ऐसा माध्यम है जो विवादों का निस्तारण करने



के साथ-साथ सामाजिक रिश्तों व सरोकारों को और प्रगाढ़ बना सकता है। 'न कोई जीता-न कोई हारा' के आदर्श वाक्य पर संचालित लोक अदालतों में किसी भी पक्ष की हार-जीत न होकर आपसी समझाइश से प्रकरण निस्तारित किए जाते हैं। जिससे अदालतों के समक्ष लंबित वादों में तो कमी आती ही है। पक्षकारों के मध्य वैमनस्य का भाव भी समाप्त होता है। इस अवसर पर रालसा एवं रजिस्ट्री के पदाधिकारीगण, अधिवक्ता, पक्षकार, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# राज्यपाल ने धानक्या में राष्ट्रीय स्मारक स्थल पहुंच श्रद्धा सुमन अर्पित किए

**जयपुर।** राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने 25 सितम्बर को पंडित दीनदयाल उपाध्याय के धानक्या स्थित राष्ट्रीय स्मारक स्थल पहुंचकर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। उन्होंने बाद में वहां पर पंडित जी के जीवन से जुड़ी स्मृतियों के संग्रहालय का भी अवलोकन किया और कहा कि उनका सम्पूर्ण जीवन आदर्श का आलोक था। बागडे ने कहा कि एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने युगीन संदर्भो में भारतीय सनातन संस्कृति को आधुनिक दृष्टि दी।उन्होंने पंडित जी के साथ की यादें भी साझा की और कहा कि उनका सान्निध्य किसी महामानव के समीप रहने की अनुभूति है। राज्यपाल ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने एकात्म मानववाद की मौलिक विचार दृष्टि ही हमें नहीं दी बल्कि अंत्योदय के विचारों और शिक्षाओं से आम जन के कल्याण के लिए प्रेरित किया। उन्होंने मुंबई में पंडित जी के सान्निध्य को याद करते हुए कहा कि पंडित



दीनदयाल जी की कथनी और करनी एक थी। वह विराट मानवीय दृष्टि के युगपुरुष थे। राजस्थान धरोहर बोर्ड के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला।

# एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत वन मंत्री ने किया पौधारोपण

जयपुर। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने 23 सितम्बर को दिवंगत ललिता देवी की स्मृति में उनके परिजनों के साथ अलवर जिले के कालाकुआं सार्वजनिक पार्क में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। मंत्री शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक पेड़ मां के नाम अभियान संचालित किया गया। यह अभियान पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कड़ी साबित हो रहा है। उन्होंने अभियान के तहत पौधारोपण कर ललिता देवी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

# गांधी वाटिका का संचालन करेगा पर्यटन विभाग

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने महात्मा गांधी के मूल्यों, सिद्धांतों एवं संघर्ष को प्रदर्शित करने वाली सेंट्रल पार्क स्थित गांधी दर्शन म्यूजियम (गांधी वाटिका) के बेहतर संचालन के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री शर्मा के निर्देश पर महात्मा गांधी जयंती (2 अक्टूबर) से पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा गांधी वाटिका का संचालन किया जाएगा। इस निर्णय के अंतर्गत पुरात्तव एवं संग्रहालय तथा पर्यटन विभाग के विशेषज्ञों की सेवाएं भी ली जा सकेगी, जिससे वाटिका का उत्कृष्ट प्रबंधन सुनिश्चित हो सकेगा। मुख्यमंत्री शर्मा ने गांधी वाटिका के बेहतर संचालन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक समिति के गठन करने के निर्देश भी दिए हैं। ये समिति नियमित रूप से वाटिका के संचालन के अतिरिक्त गांधीजी के मूल्यों के प्रचार-प्रसार पर सुझाव भी देगी। पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग के शासन सचिव रवि जैन ने बताया कि विभाग द्वारा डिजिटल एवं नवीन तकनीक के माध्यम से महात्मा गांधी की जीवन यात्रा को प्रदर्शित किया जाएगा। म्यूजियम के एक हिस्से में अंग्रेजों के भारत आगमन से गांधीजी के दक्षिण अफीका प्रवास, दूसरे हिस्से में भारत में अंग्रेजों के खिलाफ किए गए आंदोलन एवं तीसरे हिस्से में गांधीजी के दर्शन साहित्य को प्रदर्शित किया गया है।

उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी गांधीजी और उनके दर्शन से प्रेरणा ले सके, इसके लिए देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों की यहां यात्रा भी करायी जाएगी। इसके लिए गांधी वाटिका म्यूजियम को पर्यटन विभाग की सूची में शामिल किया जाएगा। साथ ही, गांधीजी के दर्शन पर बनी विभिन्न फिल्मों के माध्यम से सत्य एवं अहिंसा के संदेशों को प्रसारित किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में गांधी वाटिका का संचालन एवं रखरखाव जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा किया जा रहा है। प्राधिकरण ने 85 करोड़ रुपये की लागत से म्यूजियम का निर्माण किया है। इस वाटिका का निर्माण 3 तलों में किया गया है।

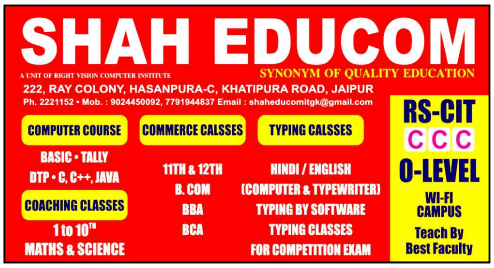

# महात्मा गाँधी - सत्य एवं अहिंसा की प्रतिमूर्ति

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को काठियावाड़, पोरबन्दर, गुजरात में करमचंद गाँधी के घर पर हुआ था। पोरबंदर पश्चिमी भारत में गुजरात राज्य का एक तटीय शहर है। ये अपनी माता पुतलीबाई के अन्तिम संतान थे। ब्रिटिश शासन के दौरान इनके पिता पहले पोरबंदर और बाद में क्रमशः राजकोट व बांकानेर के दीवान रहें। महात्मा गाँधी जी का असली नाम मोहनदास था और इनके पिता का नाम करमचंद गाँधी। इसी कारण इनका नाम पूरा नाम मोहन दास करमचंद गाँधी पड़। ये अपने तीन भाईयों में सबसे छोटे थे। इनकी माता पुतलीबाई, बहुत ही धार्मिक महिला थी, जिस का गाँधी जी के व्यक्ति त्व पर गहरा प्रभाव पड़। जिसे उन्होंने स्वंय पुणे की यरवदा जेल में अपने मित्र और सचिव महादेव देसाई को कहा था, ''तुम्हें मेरे अंदर जो भी शुद्धता दिखाई देती हो वह मैंने अपने पिता से नहीं, अपनी माता से पाई है, उन्होंने मेरे मन पर जो एकमात्र प्रभाव छोड़ा वह साधुता का प्रभाव था।'' गाँधी जी का पालन-पोषण वैष्णव मत को मानने वाले परिवार में हुआ, और उनके जीवन पर भारतीय जैन धर्म का गहरा प्रभाव पड़। यही कारण है कि वे सत्य और अहिंसा में बहुत विश्वास करते थे और उनका अनुसरण अपने पूरे जीवन काल में किया।

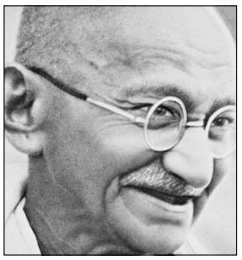

गाँधी जी की शादी सन् 1883, मई में 13 वर्ष की आयु पूरी करते ही कस्तूरबा माखन जी से हुई। गाँधी जी ने इनका नाम छोटा करके कस्तूरबा रख दिया और बाद में लोग उन्हें प्यार से बा कहने लगे। कस्तूरबा गाँधी जी के पिता एक धनी व्यवसायी थे। कस्तूरबा गाँधी शादी से पहले तक अनपढ़ थीं। शादी के बाद गाँधीजी ने उन्हें लिखना एवं पढ़ना सिखाया। ये एक आदर्श प ी थी और गाँधी जी के हर कार्य में दृढ़ता से उनके साथ खड़ी रहीं। इन्होंने गाँधी जी के सभी कार्यों में उनका साथ दिया। 1885 में गाँधी जी जब 15 साल के थे तब इनके पिताजी करमचंद गाँधी की मृत्यु हो गयी। गाँधी जी के 4 सन्तानें थी - हरीलाल गाँधी (1888), मणिलाल गाँधी (1892), रामदास गाँधी (1897) और देवदास गाँधी (1900)।

गाँधी जी की प्रारम्भिक शिक्षा पोरबंदर में हुई थी। पोरबंदर से उन्होंने मिडिल स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की। इनके पिता की बदली राजकोट होने के कारण गाँधी जी की आगे की शिक्षा राजकोट में हुई। गाँधी जी अपने विद्यार्थी जीवन में सर्वश्रेष्ठ स्तर के विद्यार्थी नहीं थे। इनकी पढाई में कोई विशेष रुचि नहीं थी। हालांकि गाँधी जी एक एक औसत दर्जे के विद्यार्थी रहे, किन्तु किसी किसी प्रतियोगिता और खेल में उन्होंने पुरुस्कार और छात्रवृतियाँ भी जीती। 21 जनवरी 1879 में राजकोट के एक स्थानीय स्कूल में दाखिला लिया। यहाँ उन्होंने अंकगणित, इतिहास और गुजराती भाषा का अध्यन किया। साल 1887 में राजकोट हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और आगे की पढ़ाई के लिये भावनगर के सामलदास कॉलेज में प्रवेश लिया। घर से दूर रहने के कारण वे पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाये और अस्वस्थ होकर पोरबंदर वापस लौट आये। गाँधी जी के पिता की मृत्यु के बाद उनके परिवार के एक करीबी मित्र भावजी दवे ने उन्हें वकालत करने की सलाह दी और कहा कि बैरिस्टर की पढ़ाई करने के बाद उन्हें अपने पिता का उत्तराधिकारी होने के कारण उनका दीवानी का पद मिल जायेगा। उनकी माता पुतलीबाई और परिवार के कुछ सदस्यों ने उनके विदेश जाने के फैसले का विरोध किया, किन्तु गाँधी जी ने अपनी माँ से वादा किया कि वे शाकाहारी भोजन करेगें। इस प्रकार अपनी माँ को आश्वस्त करने के बाद उन्हें इंग्लैण्ड जाने की आज्ञा मिली।

4 सितम्बर 1888 को गाँधी जी इंग्लैण्ड के लिये रवाना हुये। यहाँ आने के बाद इन्होंने पढ़ाई को गम्भीरता से लिया और मन लगाकर अध्ययन करने लगे। हालांकि, इंग्लैण्ड में गाँधी जी का शुरुआती जीवन परेशानियों से भरा हुआ था। उन्हें अपने खान-पान और पहनावे के कारण कई बार शर्मिंदा भी होना पड़ा। किन्तु उन्होंने हर एक परिस्थिति में अपनी माँ को दिये वचन का पालन किया। बाद में इन्होंने लंदन शाकाहारी समाज (लंदन वेजीटेरियन सोसायटी) की सदस्यता ग्रहण की और इसके कार्यकारी सदस्य बन गये। यहाँ इनकी मुलाकात थियोसोफिकल सोसायटी के कुछ लोगों से हुई जिन्होंने गाँधी जी को भगवत् गीता पढ़ने को दी। गाँधी जी लंदन वेजीटेरियन सोसायटी के सम्मेलनों में भाग लेने लगे और उसकी पत्रिका में लेख लिखने लगे। यहाँ तीन वर्षों (1888-1891) तक रहकर अपनी बैरिस्टरी की पढ़ाई पूरी की और 1891 में ये भारत लौट आये।

1891 में जब गाँधी जी भारत लौटकर आये तो उन्हें अपनी माँ की मृत्यु का दुखद समाचार प्राप्त हुआ। उन्हें यह जानकर बहुत निराशा हुई कि वकालत एक स्थिर व्यवसायी जीवन का आधार नहीं है। गाँधी जी ने बंबई जाकर वकालत का अभ्यास किया किन्तु स्वंय को स्थापित नहीं कर पाये और वापस राजकोट आ गये। यहाँ इन्होंने लागों की अर्जियाँ लिखने का कार्य शुरु कर दिया। एक ब्रिटिश अधिकारी को नाराज कर देने के कारण इनका यह काम भी बन्द हो गया।

एक वर्ष के कानून के असफल अभ्यास के बाद, गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका के व्यापारी दादा अब्दुला का कानूनी सलाहकार बनने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। 1883 में गाँधी जी ने अफ्रीका (डरबन) के लिये प्रस्थान किया। इस यात्रा और वहाँ के अनुभवों ने गाँधी जी के जीवन को एक महत्त्वपूर्ण मोडदिया। इस यात्रा के दौरान गाँधी जी को भारतियों के साथ हो रहें भेदभाव को देखा। ऐसी कुछ घटनाएँ उनके साथ घटित हुई जिससे उन्हें भारतियों और अश्वेतों के साथ हो रहे अत्याचारों का अनुभव हुआ जैसे- 31 मई 1883 को प्रिटोरिया जाने के दौरान प्रथम श्रेणी की टिकट के बावजूद उन्हें एक श्वेत अधिकारी ने गाडी से धक्का दे दिया और उन्होंने ठिठुरते हुये रात बिताई क्योंकि वे किसी से पुनः अपमानित होने के डर से कुछ पूछ नहीं सकते थे, एक अन्य घटना में एक घोड चालक ने उन्हें पीटा क्योंकि उन्होंने एक श्वेत अंग्रेज को सीट देकर पायदान पर बैठकर यात्रा करने से इंकार कर दिया था, यूरोपियों के लिये सुरक्षित होटलों पर जाने से रोक आदि कुछ ऐसी घटनाऐं थी जिन्होंने गाँधी जी के जीवन का रुख ही बदल दिया। नटाल (अफ्रीका) में भारतीय व्यापारियों और श्रमिकों के लिये यह अपमान आम बात थी और गाँधी जी के लिये एक नया अनुभव। यहीं से गाँधी जी के जीवन में एक नये अध्याय की शुरुआत हुई। गाँधी जी ने सोचा कि यहाँ से भारत वापस लौटना कायरता होगी अतः वहीं रह कर इस अन्याय का विरोध करने का निश्चय किया। इस संकल्प के बाद वे अगले 20 वर्षों तक दक्षिण अफ्रीका में ही रहें और भारतियों के अधिकारों और सम्मान के लिये संघर्ष किया।

संघर्ष के इस प्रथम चरण के दौरान गाँधी जी की राजनैतिक गतिविधियाँ नरम रही। इस दौरान उन्होंने केवल सरकार को अपनी समस्याओं और कार्यों से संबंधित याचिकाएँ भेजते थे। भारतियों को एक सूत्र में बाँधने के लिये 22 अगस्त 1894 में 'नेटाल भारतीय कांग्रेस का' गठन किया। 'इण्डियन ओपिनियन' नामक अखबार के प्रकाशन की प्रक्रिया शुरु की। इस संघर्ष को व्यापारियों और वकीलों के आन्दोलन के नाम से जाना जाता हैं। अफ्रीका में संघर्ष के दूसरे चरण की शुरुआत 1906 में हुई। इस समय उपनिवेशों की राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन हो चुका था, तो गाँधी जी ने नये स्तर से आन्दोलन को प्रारम्भ किया। यहीं से मूल गाँधीवादी प्राणाली की शुरुआत मानी जाती है। 30 मई 1910 में जोहान्सवर्ग में टाल्सटाय और फिनिक्स सेंटमेंट की स्थापना। कार्यस के कार्यकर्ताओं को अहिंसा और सत्याग्रह का प्रशिक्षण।

1915 में 46 वर्ष की उम्र में गाँधी जी भारत लौट आये, और भारत की स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन किया। गोपाल कृष्ण गोखले (गाँधी जी के राजनीतिक गुरु) की सलाह पर गाँधी जी नें एक वर्ष शान्तिपूर्ण बिना किसी आन्दोलन के व्यतीत किया। इस समय में उन्होंने भारत की वास्तविक स्थिति से रूबरू होने के लिये पूरे भारत का भ्रमण किया। 1916 में गाँधी जी ने अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की। फरवरी 1916 में गाँधी जी ने पहली बार बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय में मंच पर भाषण दिया। जिसकी चर्चा पूरे भारत में हुई। साल 1917 में बिहार के चम्पारण जिले में रहने वाले किसानों के हक के लिये गाँधी जी ने आन्दोलन किया। यह गाँधी जी का भारत में प्रथम सक्रिय आन्दोलन था, जिसमें गाँधी जी को पहली राजनैतिक सफलता दिलाई। इस आन्दोलन में उन्होंने अहिंसात्मक सत्याग्रह को अपना हथियार बनाया और इस प्रयोग में प्रत्याशित सफलता भी अर्जित की।

19 वीं शताब्दी के अन्त में गुजरात के खेड़ा जिले के किसान अकाल पड़ने के कारण असहाय हो गये और उस समय उपभोग की वस्तुओं के भी दाम बहुत बढ़ गये थे। ऐसे में किसान करों का भुगतान करने में बिल्कुल असमर्थ थे। इस मामले को गाँधी जी ने अपने हाथ में लिया और सर्वेंट ऑफ इण्डिया सोसायटी के सदस्यों के साथ पूरी जाँच-पड़ताल के बाद अंग्रेज सरकार से बात की और कहा कि जो किसान लगान देने की स्थिति में है वे स्वतः ही दे देंगे वशर्ते सरकार गरीब किसानों का लगान माफ कर दें। ब्रिटिश सरकार ने यह प्रस्ताव मान लिया और गरीब किसानों का लगान माफ कर दिया। 1918 में अहमदाबाद के मिल मालिक कीमत बढने के बाद भी 1917 से दिये जाने वाले बोनस को कम बंद कर करना चाहते थे। मजदूरों ने माँग की बोनस के स्थान पर मजदूरी में 35ः की वृद्धि की जाये, जबकि मिल मालिक 20 प्रतिशत से अधिक वृद्धि करना नहीं चाहते थे। गाँधी जी ने इस मामले को सौंपने की माँग की। किन्तु मिल मालिकों ने वादा खिलाफी करते हुये 20 प्रतिशत वृद्धि की। जिसके खिलाफ गाँधी जी नें पहली बार भूख हड़ताल की। यह इस हड़ताल की सबसे खास बात थी। भूख हड़ताल के कारण मिल मालिकों को मजदूरों की माँग माननी पड़ी। इन आन्दोलनों ने गाँधी जी को जनप्रिय नेता तथा भारतीय राजनीति के प्रमुख स्तम्भ के रुप में स्थापित कर दिया।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के दौरान प्रेस पर लगे प्रतिबंधों और बिना जाँच के गिरफ्तारी वे आदेश को सर सिडनी रोलेट की अध्यक्षता वाली समिति ने इन कडे नियमों को जारी रखा। जिसे रोलेट एक्ट के नाम से जाना गया। जिसका पूरे भारत में व्यापक स्तर पर विरोध हुआ। उस विरोधी आन्दोलन को असहयोग आन्दोलन का नाम दिया गया। असहयोग आन्दोलन के जन्म का मुख्य कारण रोलट एक्ट और जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड (1919) था। गाँधी जी अध्यक्षता में 30 मार्च 1919 और 6 अप्रैल 1919 को देश व्यापी हड़ताल का आयोजन किया गया। चारों तरफ देखते ही देखते सभी सरकारी कार्य ठप्प हो गये। अंग्रेज अधिकारी इस असहयोग के हथियार के आगे बेवस हो गये। 1920 में गाँधी जी कांग्रेस के अध्यक्ष बने और इस आन्दोलन में भाग लेने के लिये भारतीय जनमानस को प्रेरित किया। गाँधी जी की प्रेरणा से प्रेरित होकर प्रत्येक भारतीय ने इसमें बढ-चढ कर भाग लिया। इस आन्दोलन को और अधिक प्रभावी करने के लिये और हिन्दू- मुस्लिम एकता को मजबूती देने के उद्देश्य से गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन को खिलाफत आन्दोलन से जोड दिया।

1922 तक आते आते यह देश का सबसे बड़ आन्दोलन बन गया था। एक हड़ताल की शान्तिपूर्ण विरोध रैली के दौरान यह अचानक हिंसात्मक रुप में परिणित हो गया। विरोध रैली के दौरान पुलिस द्वारा प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार करके जेल में डालने से भीड आक्रोशित हो गयी। और किसानों के एक समूह ने फरवरी 1922 में चौरी-चौरा नामक पुलिस स्टेशन में आग लगा दी। इस घटना में कई निहत्थे पुलिसकर्मियों की मृत्यु हो गयी। इस घटना से गाँधी जी बहुत आहत हुये और उन्होंने इस आन्दोलन को वापस ले लिया। गांधी जी ने यंग इण्डिया में लिखा था कि, 'आन्दोलन को हिंसक होने से बचाने के लिए मैं हर एक अपमान, हर एक यातनापूर्ण बहिष्कार, यहाँ तक की मौत भी सहने को तैयार हूँ।'

सविनय अवज्ञा, इस आनदोलन का उद्देश्य पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना था। गाँधी जी और अन्य अग्रणी नेताओं को अंग्रेजों के इरादों पर शक होने लगा था कि वे अपनी औपनिवेशिक स्वराज्य प्रदान करने की घोषणा को पूरी करेगें भी या नहीं। गाँधी जी ने अपनी इसी माँग का दबाव अंग्रेजी सरकार पर डालने के लिये 6 अप्रैल 1930 को एक और आन्दोलन का नेतृत्व किया जिसे सविनय अवज्ञा आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। इसे दांडि मार्च या नमक कानून भी कहा जाता है। यह दांडि मार्च गाँधी जी ने साबरमती आश्रम से निकाली। इस आन्दोलन का उद्देश्य सामूहिक रुप से कुछ विशिष्ट गैर-कानूनी कार्यों को करके सरकार को झुकाना था। इस आन्दोलन की प्रबलता को देखते हुये सरकार ने तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन को समझौते स्वीकार कर लिया और आन्दोलन वापस ले लिया। क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद गाँधी जी ने अंग्रेजों के खिलाफ अपना तीसरा बड़ आन्दोलन छेड़ने का निर्णय लिया। इस आन्दोलन का उद्देश्य तुरन्त स्वतंत्रता प्राप्त करना था। 8 अगस्त 1942 कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन में अंग्रेजों भारत छोड़ें का नारा दिया गया और 9 अगस्त 1942 को गाँधी जी के कहने पर पूरा देश आन्दोलन में शामिल हो गया। ब्रिटिश सरकार ने इस आन्दोलन के खिलाफ काफी सख्त रवैया अपनाया। इस आन्दोलन को दबाने में सरकार को एक वर्ष से अधिक समय लगा। आखिरकार देश को 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिली और भारत आजाद हुआ। ने 30 जनवरी 1948 को शाम 5 बजकर 17 मिनट पर बिरला हाउस में गाँधी जी की गोली लगने से मृत्यु हो गई। गाँधी जी बापू एवं राष्ट्रपिता के नामों से प्रसिद्ध हैं। प्रति वर्ष 2 अक्टूबर को उनका जन्म दिन भारत में गांधी जयंती के रूप में और पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है।

# एक पेड़ माँ के नाम अभियान में 80 करोड़ पौधे रोपे गए

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में पीपल का पौधा लगाकर एक पेड़ माँ के नाम अभियान की शुरुआत की थी। प्रधानमंत्री ने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए सामूहिक प्रयासों के महत्व पर जोर दिया। पिछले एक दशक में भारत के वन क्षेत्र में हुई प्रगति का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यह अभियान देश के सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। यह अभियान पर्यावरण के प्रति अपना दायित्व निभाने के साथ-साथ माताओं के प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव दर्शाने की एक अनूठी पहल है। एक पेड़ माँ के नाम एक संकेतिक भाव है - अपनी माँ के नाम पर एक पेड़ लगाने का उद्देश्य जहां, जीवन को पोषित करने में माताओं की भूमिका का सम्मान करना है। तो वहीं दूसरी ओर धरती पर स्वच्छ वातावरण बनाए रखने में अपना योगदान देना भी है। पेड़, हमारे जीवन को बनाए रखते हैं और एक माँ की तरह ही पोषण, सुरक्षा और भविष्य प्रदान करते हैं। 'एक पेड़ मां के नाम' पहल के माध्यम से, कोई भी व्यक्ति एक पेड़ लगाकर अपनी माता को एक जीवंत श्रद्धांजलि और एक स्थायी स्मृति भेंट कर सकता है, इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को भी पूरा किया जा सकता है।

### 80 करोड़ पौधा रोपण

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने सितंबर 2024 तक एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत 80 करोड़ पौधे लगाने के अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक पूरा किया। यह लक्ष्य तय समय सीमा से 5 दिन पहले यानी 25 सितंबर 2024 को ही हासिल कर लिया गया। मंत्रालय की यह उपलब्धि सरकारी एजेंसियों, स्थानीय समुदायों और विभिन्न हितधारकों के सहयोग और प्रयासों का परिणाम है। 22 सितंबर 2024 को, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत प्रादेशिक सेना की 128 इन्फैंट्री बटालियन और पारिस्थितिकी कार्य बल इकाई ने सिर्फ एक घंटे में 5 लाख से ज्यादा पौधे लगाकर एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। जैसलमेर में प्रधानमंत्री के एक पेड़ माँ के नाम और प्रादेशिक सेना की पहल, भागीदारी और जिम्मेदारी के तहत विशेष पौधारोपण अभियान संचालित किया

गया। इस अभियान का उद्देश्य पारिस्थितिकी को यथास्थिति में बनाए रखना और स्थानीय समुदायों के बीच पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। प्रादेशिक सेना की इकाई के इन प्रयासों को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन द्वारा निम्नलिखित विश्व रिकॉर्ड के साथ मान्यता दी गई। एक घंटे में एक टीम द्वारा लगाए गए सबसे ज्यादा पौधे। एक घंटे में महिलाओं की एक टीम द्वारा लगाए गए सबसे ज्यादा पौधे एवं एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक संख्या में लोगों द्वारा पौधारोपण।

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के प्रतिनिधियों की मौजूदगी ने यह सुनिश्चित किया कि वृक्षारोपण को सावधानीपूर्वक सत्यापित और प्रमाणित किया गया था। इस उपलब्धि के लिए पारिस्थितिकी कार्य बल को पुरस्कार भी दिया गया। यह वृक्षारोपण अभियान, जो लोग पेड़ों की रक्षा करते हैं, वे संरक्षित हैं, आदर्श वाक्य का सर्वोत्तम उदाहरण है। यह अभियान भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए पर्यावरण संरक्षण के महत्व को भी दर्शाता है।

प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान के अनुरूप, विभिन्न मंत्रालयों ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रत्येक मंत्रालय और विभाग का इस पहल में पर्याप्त योगदान सततता, हरित आवरण वृद्धि और सामुदायिक प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। रक्षा मंत्रालय ने इस अभियान के तहत स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 लाख पौधे लगाने की राष्ट्रव्यापी पहल की घोषणा की। भारतीय सशस्त्र बलों, रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों, राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) और अन्य संबद्ध निकायों ने एक हरित और स्वस्थ भारत के निर्माण के लिए अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया। कोयला मंत्रालय द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में जारी प्रयासों के अंतर्गत सचिव वी.एल. कांथा राव ने मिलेनियम पार्क में एक पौधा रोपण अभियान का आयोजन किया। पिछले कुछ वर्षों में कोयला और लिग्नाइट क्षेत्र में सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा लगाए गए पौधे खनन क्षेत्रों में कार्बन के प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

इसके अतिरिक्त , सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा संचालित पौधा रोपण अभियान के अंतर्गत देश भर में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 7,000 पौधे लगाए गए हैं। अगस्त के मध्य में चलाए गए इस अभियान का उद्देश्य 17 सितंबर से 1 अक्टूबर, 2024 तक चलने वाले स्वच्छता ही सेवा अभियान के दौरान पौधा रोपण के प्रयासों में तेजी लाना है।

# iTVoice® all things tech.

## India's Premier IT Magazine & First Daily Tech News OTT

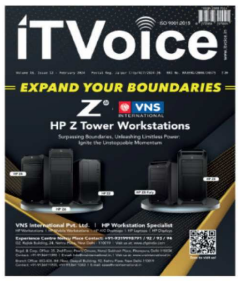


Magazines & Newspapers

Highest Digital Presence

www.itvoice.in

Daily Tech News & Podcasts

Contact for Print & Digital Marketing

+91 141 4014911
info@itvoice.in

ICPL
www.icpljpr.com

Professional IT Support

Domain & Hosting
Web Development
Customized Software Solution
Web Operation
Client / Server Management
Network Maintenance
Service Desk Support
Customized IT Support Services
Dealing in all Major Brands

Informatic Computech Private Limited

Jaipur - Rajasthan (Ph.) +91-141-2280510 md@icpljpr.com


स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक तरूण कुमार टांक के लिये महारानी प्रिन्टर्स प्लाट नं. 17, माँ वैष्णो देवी नगर, कालवाड़ रोड, जयपुर से मुद्रित एवं 52/121, वीरतेजाजी रोड, मानसरोवर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-तरूण कुमार टांक Email: mahanagarstambh@gmail.com